UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME		
CENTRE NUMBER		CANDIDATE NUMBER

7515806260

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2012**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

DC (NF/LEO) 53031/2
© UCLES 2012
UNIVERSITY of CAMBRIDGE International Examinations

[Turn over

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–5.

निम्नलिखित आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'जिस्म तो टूटा, मन नहीं'

राजस्थान के एक दूरस्थ मरुस्थली गांव सुई में एक दुर्घटना के बाद विकलांग बनी ज़िंदगी को ग्रामीण बुजुर्ग शिशुपाल सिंह ने ऐसे बदला जैसे वे स्वयं जीता जागता रेडियो बन गए हों। शिशुपाल पिछले दो दशक से अपने बिस्तर से ही हर रोज़ पूरे गांव को ख़बरें सुनाते हैं। वे ज़रूरी सूचनाएं भी प्रसारित करते हैं। इसके लिए शिशुपाल एक माइक और लाउडस्पीकर का सहारा लेते हैं। उनके प्रसारण में कभी रेडियो की ख़बरें, कभी उपयोगी सूचनाएं और कभी जीवन दर्शन की सूक्तियां शामिल होती है।

दुर्घटना के बाद शिशुपाल की ज़िंदगी एक कमरे में क़ैद होकर रह गई। वह ख़ुद तो दुनिया से कट गए, लेकिन अपने गांव को इस प्रसारण के ज़रिए दुनिया से जोड़े रखा। बीकानेर से कोई 150 किलोमीटर का सफ़र तय कर हम जब सुई गांव पहुंचे तो शिशुपाल अतीत की यादों में खोए मिले। वे कहने लगे – "मैं उस समय दुर्घटना का शिकार हो गया जब सामाजिक कार्य से कहीं जा रहा था। इसमें मेरी रीढ़ की हड्डी टूट गई और फिर मैं कभी उठ न सका।"

शिशुपाल कहते हैं, "मैं हर रोज़ सुबह उठकर लाउडस्पीकर के ज़रिए लोगों का अभिवादन करता हूँ। उन्हें कहता हूँ कि सवेरा हो गया है, नित्य काम में जुट जाएं। इसके बाद मैं कुछ भजन तथा देश-विदेश की ख़बरें भी गांव वालों को सुनाता हूँ। लोगों से आग्रह करता हूँ कि बच्चों को अच्छी शिक्षा दें। लोगों को नशे से दूर रहने को कहता हूँ।"

गांव के हरफूल कहते हैं कि "अगर किसी का मवेशी खो जाए, या राशन का गेहूं बंटने के लिए आया हो, शिशुपाल अपने इस प्रसारण तंत्र के ज़रिए पूरे गांव को ख़बर दे देते हैं। कई बार उनके प्रसारण से खोए हुए मवेशी ग्रामीणों को वापस मिल जाते हैं, यहाँ तक कि ग़ायब हुए आभूषण भी वापस मिले हैं। हमारे लिए शिशुपाल जी बहुत अच्छा काम करते हैं।"

ऐसे समय जब कुछ टीवी चैनल ख़बरों से ज़्यादा विज्ञापन प्रसारित करते हों और सूचनाएं मुनाफे की भेंट चढ़ जाती हों, ये शिशुपाल का उत्साह ही है कि विकलांग ज़िंदगी के बावजूद वे समाज के लिए ख़बरें सुनाते हैं। दुर्घटना ने उनका जिस्म तो तोड़ा लेकिन शिशुपाल ने अपने मन को नहीं टूटने दिया।

© UCLES 2012

For Examiner's Use

1 शिशुपाल को दुर्घटना के बाद रेडियो की संज्ञा क्यों दी गई?

.... [1]

2 शिशुपाल किस माध्यम से सूचनाएं गांव वालों तक पहुंचाते हैं?

.... [1]

3 शिशुपाल किस कार्य के लिए प्रोत्साहित <u>नहीं</u> करते हैं?

.... [1]

4 शिशुपाल के प्रसारण से गांव को क्या मुख्य फायदे हुए हैं? कोई दो उदाहरण दीजिए।

(i) .... [1]

(ii) .... [1]

5 क्यों कुछ टी.वी. चैनल उपयोगी जानकारी देने में पीछे रह जाते हैं?

.... [1]

[अंक: 6]

© UCLES 2012

अभ्यास 2 प्रश्न 6

आइए और अपनी रचनात्मक योग्यता का परिचय दीजिए। क्या आप अपनी कला से लोगों को जागरूक ग्राहक बनने का संदेश दे सकते हैं?

'जागो ग्राहक जागो' अभियान
विज्ञान भवन, नई दिल्ली 110001
दूरभाष 2978452390, 2950893451

जागो ग्राहक जागो अभियान पोस्टर प्रतियोगिता आवेदन

जागो ग्राहक जागो अभियान को अखिल भारतीय स्तर पर सफल बनाने के लिए एक पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता में 14 से 16 वर्ष की आयु तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ दस पोस्टरों को सम्मानित किया जाएगा जिसमें विजेताओं को एक वर्ष के लिए छात्रवृत्ति और एक कम्प्यूटर दिया जाएगा।

गीता मारवाह की आयु 16 वर्ष है। वह कक्षा बारहवीं की छात्रा है। गीता मारवाह को चित्रकला में विशेष रूचि है। बचपन से ही रंग बिरंगे चित्र उन्हें आकर्षित करते रहे हैं। विशेषकर बड़े फिल्मी पोस्टरों को वह ज़्यादा पसंद करती है। पोस्टर शैली में विशेष रूचि के कारण ही वे स्कूल के बाद पोस्टर चित्रकला का विशेष प्रशिक्षण ले रही हैं। वे पुणें में अपने परिवार के साथ गणेश अपार्टमेंट के मकान न. 384 में रहती हैं। उसका टेलिफोन न. 255989801 है। उनका ई-मेल पता है gm61@art.ac.in गीता मारवाह की पारंपरिक भित्ति चित्र शैली में दिलचस्पी है। इसके साथ ही आधुनिक पोस्टर शैली से भी विशेष लगाव है।

गीता मारवाह ने यह विज्ञापन देखा और वह इस प्रतियोगिता के लिए आवेदन करना चाहती हैं।

आप अपने को गीता मारवाह मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

For Examiner's Use

'जागो ग्राहक जागो' अभियान

विज्ञान भवन, नई दिल्ली 110001

दूरभाष 2978452390, 2950893451

आवेदक का नाम ......गीता मारवाह ....

आयु - ....

ईमेल - ....

स्थायी पता - ....

शहर - ....

दूरभाष - ....

पोस्टर शैली का अनुभव

....

चित्रकला की दो शैलियों का ब्यौरा दीजिए

....

....

....

[अंक: 7]

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

भूमंडलीकरण के दौर में खेलों के व्यवसायीकरण पर निम्नलिखित लेख पढ़िए।

अगले पृष्ठ पर दिए गए कार्य को निर्देशानुसार पूरा कीजिए।

भूमंडलीकरण के दौर में खेलों का व्यवसायीकरण

व्यवसायीकरण की आंधी से खेलों की दुनिया भी नहीं बची रह सकी। आज खेलों का अपना एक अलग अर्थशास्त्र है। पिछले दिनों भारत में आयोजित इंडियन प्रीमियर लीग यानी आईपीएल ने यह साबित कर दिया कि खेलों का बाजारीकरण किस हद तक किया जा सकता है और यह कितने भारी लाभ का सौदा है। हालांकि, पहले से ही क्रिकेट में पैसों की भरमार रही है लेकिन आईपीएल ने इस खेल की अर्थव्यवस्था को ऐसा विस्तार दिया है कि इसका असर लंबे समय तक बना रहेगा।

एक अनुमान के मुताबिक भारत में खेल उद्योग का आकार दस हजार करोड़ रुपए सालाना तक पहुंच गया है। खेलों ने उत्सव का रूप धारण कर लिया है। यह हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन को प्रभावित करते हैं। बाजार ने खेलों को एक ऐसे उद्योग में तब्दील कर दिया है कि इससे सामान्य जनजीवन पर असर पड़ने लगा है। मैच के हिसाब से लोग अपनी दिनचर्या तय करने लगे हैं। क्रिकेट के अलावा अगर देखें तो भारत में भी अब अन्य खेलों में पैसों का दखल बढ़ा है।

2008 बीजिंग में संपन्न ओलंपिक ने भी यह साबित कर दिया कि खेलों की अपनी एक अलग अर्थव्यवस्था है और भूमंडलीकरण के इस दौर में इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। बहरहाल, अब हालत ऐसी हो गई है कि खेल प्रतिस्पर्धाएं कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बजट पर असर डालने लगी हैं। इस बात में किसी को भी संदेह नहीं होना चाहिए कि खेलों ने एक उद्योग का स्वरूप ले लिया है।

बहरहाल, इस बार के बीजिंग ओलंपिक के बारह मुख्य प्रायोजक थे। इसमें कोडक जैसी कंपनी भी शामिल रही, जिसने आधुनिक खेलों का साथ 1896 से ही दिया है। इसके अलावा ओलंपिक के बड़े प्रायोजकों में कोका कोला भी थी, जो 1928 से ओलंपिक के साथ जुड़ी हुई है। इन बारह मुख्य प्रायोजकों से आयोजकों की संयुक्त आमदनी 866 मिलियन डॉलर तक पहुँच गई है। इसके अलावा कई छोटे प्रायोजक भी ओलंपिक में शामिल थे।

वैसे तो ओलंपिक में पदक जीतने वालों को कोई ईनामी राशि नहीं मिलती है। पर जैसे ही कोई खिलाड़ी पदक जीतता है वैसे ही उस पर धन की बरसात होने लगती है। प्रायोजक ऐसे खिलाड़ियों के जरिए अपने उद्योग को लोकप्रिय बनाने का मौका नहीं गंवाते हैं। इस भारी लाभ का एक अन्य असर है जिसके अंतर्गत कई सुधार कार्यों के लिए यह प्रायोजक कंपनियां आगे आई हैं। कंपनियों द्वारा लाभ का एक अंश उन संस्थाओं को दिया जा रहा है जो स्वास्थ्य, शिशु कल्याण या जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

आपके स्कूल में एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। निबंध का विषय है, क्या वास्तव में 'खेलों ने उद्योग का रूप ले लिया है?' भूमंडलीकरण के दौर में खेलों का व्यवसायीकरण नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिसपर आपका निबंध आधारित होगा।

For Examiner's Use

7 क्रिकेट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- .... [1]
- .... [1]

8 भारत में रोज़मर्रा के जनजीवन पर खेलों का प्रभाव

- .... [1]
- .... [1]

9 ओलंपिक खेलों में बड़ी कंपनियों की बढ़ती भूमिका

- .... [1]
- .... [1]
- .... [1]

[अंक: 7]

अभ्यास 4 प्रश्न 10

निम्नलिखित आलेख के आधार पर सारांश लिखिए और बताइए कि किस सीमा तक यह पहल सफल रही है? आलेख की मुख्य बातों को अपने शब्दों में लिखिए।

आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

पर्यावरण संरक्षण की अनूठी पहल

'अर्थपावर' पर्यावरण को बचाने का ऐसा सकारात्मक अभियान है, जिसका इतिहास कुछ साल ही पुराना है। 'वर्ल्डवाइड फंड फ़ॉर नेचर' द्वारा मौसम परिवर्तन के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए चलाये गये इस अभियान की शुरुआत 2007 में सिडनी के 22 लाख लोगों ने अपने घर और इंडस्ट्री में एक घंटे ग़ैर ज़रूरी बत्तियां बंद करके की। इसकी शुरुआत इसलिए भी हुई थी कि गरम हो रही धरती और असंतुलित जलवायु के प्रति कोई भी प्रयास कारगर नहीं हो पा रहा था।

2007 में सिडनी से आरम्भ होने वाले इस अभियान में 2008 तक, यानी एक साल में ही 35 देशों के लगभग पांच करोड़ लोग जुड़े। किसी भी अभियान में एक ही वर्ष में इतनी संख्या में लोगों का शामिल होना इसकी लोकप्रियता दर्शाता है। 2009 में इस अभियान से जुड़ने वाले देशों की संख्या 88 तक पहुंच गयी। 2009 में विश्व के चार हजार शहरों के लगभग आठ करोड़ लोग एक घंटे के लिए अपने घरों व कारखानों में बिजली के उपकरण बंद रख 'अर्थपावर' मुहिम में शामिल हुए।

भारत में 2009 में 50 लाख लोगों ने एक घंटा बत्तियां बंद रखीं। इस अभियान में 56 शहरों ने भाग लिया। कुतुबमीनार, लाल किला, हुमायूं मकबरा, सिनेमा, माल, सभी एक घंटे तक बंद रहे। इस एक घंटे में 1000 मेगावाट की बिजली बची, 600 मेगावाट केवल दिल्ली शहर में बची। 2009 में मौसम पविर्तन को लेकर किये गये किसी भी प्रयास में यह सबसे बड़ा अभियान था। 'अर्थपावर' की इस एक घंटे में ऊर्जा की बचत ने ग्लोबल वॉर्मिंग से जूझ रही दुनिया को नई राह दिखाई।

प्रति वर्ष मार्च के अंतिम शनिवार को मनाये जाने वाले इस अभियान को इस साल और बल मिला। इस साल भी इस दिन रात्रि साढ़े आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक 125 देशों के एक अरब से अधिक लोगों ने धरती के सुरक्षित भविष्य के संकल्प के साथ इसे दोहराया। इस दौरान दुनिया बिजली बचाने के लिए अंधेरे के आगोश में रही। अभियान की सफलता व इसे मिली जन सहभागिता का अंदाजा इसी से लगता है कि पिछले वर्षों की अपेक्षा इस बार आधा घंटा अधिक बत्तियां बंद रखीं गईं। निर्धारित समय में विश्व के आठ सौ से ज़्यादा प्रमुख स्मारकों की बत्तियां बुझी रहीं। यही नहीं, अनेक नामी गिरामी कंपनियों ने भी अपने कार्यालयों की बत्तियां बुझा कर इस अभियान को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया।

अर्थपावर की सफलता

For Examiner's Use

[अंक: 10]

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 11–17

निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'बाबर का स्कूल'

खुले आसमान के नीचे बैठे 20 बच्चे अपनी कक्षा शुरू होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इन बच्चों में से कुछ अपनी किताबों में आंखें गड़ाए हैं तो कुछ इधर-उधर ताक रहे हैं। इन्हीं बच्चों के बीच में खाकी पैंट पहने खड़े हैं हेडमास्टर साहब जो लगातार जोर-जोर से बच्चों को निर्देश दे रहे हैं। हेडमास्टर की बात सारे बच्चों के मतलब की नहीं है इसलिए कुछ ही दूर टेढ़ी-मेढ़ी लाइनों में बैठे पहली कक्षा के बच्चों को आप हंसी-ठिठोली करते और धूल में खेलते हुए देख सकते हैं।

यह है बाबर अली का स्कूल, आनंद शिक्षा निकेतन। यह स्कूल उन 800 बच्चों की पढ़ने-लिखने में मदद कर रहा है जो औपचारिक शिक्षा तंत्र से छिटक गए हैं। यहां बच्चे कई किलोमीटर दूर से पैदल चलकर आते हैं। बाबर अली का यह आनंद शिक्षा निकेतन स्कूल खेल-खेल में बन गया था। जैसा कि वह बताता है, "हम स्कूल-स्कूल खेला करते थे। क्योंकि मेरे दोस्त कभी स्कूल नहीं गए थे। वे छात्र बनते थे और मैं हेडमास्टर। खेल-खेल में वे अंकगणित सीख गए।" 2002 में बाबर ने इस खेल को कुछ गंभीरता से लिया और स्कूल शुरू कर दिया।

लेकिन बाद में जैसे-जैसे इस नन्हे हेडमास्टर और उसके स्कूल की खबर फैलती गई लोग मदद करने के लिए आगे आते गए। मदद करनेवालों में बाबर के स्कूल शिक्षकों, स्थानीय रामकृष्ण मिशन के संन्यासियों और आईएएस अधिकारियों से लेकर स्थानीय पुलिसकर्मी भी शामिल हो गए। बाबर ने अपने स्कूल में जब मध्याह्न भोजन की शुरुआत की तो पहले चावल उसके पिता के खेत से ही आया लेकिन अब स्थानीय प्रशासन में स्थित दोस्तों की मदद से अनाज सरकारी कोटे से आता है।

इस नन्हे हेडमास्टर का हर दिन सुबह सात बजे अपने स्कूल से शुरू होता है। जहां बाबर बारहवीं कक्षा का छात्र है। दोपहर एक बजे स्कूल खत्म होते ही वह अपनी दूसरी भूमिका के लिए तैयार हो जाता है। दूसरी तरफ सफेद साड़ी पहननेवाली और स्कूल में एक हाथ में छड़ी रखकर घूमनेवाली टुलु रानी हाजरा जो सुबह के समय मछली बेचने का काम करती हैं और दोपहर के वक्त वे इस शिक्षा आंदोलन की सक्रिय सदस्य बन जाती हैं। वे घूम-घूम कर मछली बेचने के दौरान उन लोगों से मिलती हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को स्कूल भेजना बंद कर दिया है। अपने स्कूल के लिए नए छात्र जोड़ना भी उनका काम है। अब तक वे ऐसे 80 बच्चों को स्कूल की राह दिखा चुकी हैं।

बाबर की ही तरह दसवीं में पढ़नेवाले इम्तियाज शेख कहते हैं, "शिक्षा अंधियारा दूर करता है। यहां जिंदगी बेहतर बनाने का यही रास्ता है। इसीलिए मैं आनंद शिक्षा निकेतन में पढ़ाता हूं।" लेकिन क्या इन शिक्षकों की कम उम्र छात्रों को संभालने में आड़े नहीं आती? इस पर बाबर कहते हैं, "हमारे बीच उम्र का कम फासला इस हिसाब से फायदेमंद है कि हम छात्रों के साथ दोस्तों की तरह रह सकते हैं। मेरे स्कूल में छड़ी कोने में पड़ी रहती है।" सपने देखनेवाले और उन्हें जमीन पर उतारनेवाले इस नन्हे हेडमास्टर का अगला सपना है- अपने स्कूल के लिए एक पक्की इमारत। वे चाहते हैं कि एक प्रयोगशाला, खेल का मैदान और ऑडिटोरियम भी बन सके। लेकिन ये फिलहाल बाद की बातें हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही और ग़लत का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो पाठांश के आधार पर वह वाक्य भी लिखिए जिससे वाक्य सही साबित होता है।

For Examiner's Use

	सही	ग़लत
उदाहरण – बच्चे कक्षा के अंदर बैठे हैं।	☐	✓

औचित्य – बच्चे खुले आसमान के नीचे बैठे हैं।

	सही	ग़लत
11 हेड मास्टर की बात सारे बच्चे ध्यान से सुन रहे हैं।	☐	☐

....

	सही	ग़लत
12 स्कूल में बच्चे साइकिलों पर आते हैं।	☐	☐

....

	सही	ग़लत
13 बाबर अली और उनके दोस्तों ने खेल खेल में ही अंकगणित सीखा।	☐	☐

....

	सही	ग़लत
14 मध्याह्न भोजन के लिए चावल अभी भी बाबर के पिता के खेत से आता है।	☐	☐

....

15 प्रत्येक दिन बाबर अली की पहली भूमिका क्या है?

.... [1]

16 टुलु रानी हाजरा स्कूल के लिए क्या काम करती हैं?

.... [1]

17 क्यों स्कूल में छड़ी कोने में पड़ी रहती है?

.... [1]

[अंक: 10]

अभ्यास 6 प्रश्न 18

क्या सचमुच वीडियो खेलों और टेलिविज़न ने पढ़ने की संस्कृति को प्रभावित किया है?

ऊपर लिखे शीर्षक पर आपके स्कूल में एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। आप इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहते हैं। अपने विचारों को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से अपना भाषण नीचे दिए स्थान पर लिखिए।

आपका भाषण 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
लिखित भाषण पर अंक विषय संबंधी अंर्तवस्तु, शैली और सही भाषा लिखने पर दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[**अंक**: 20]

© UCLES 2012

BLANK PAGE

© UCLES 2012

BLANK PAGE

© UCLES 2012

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2012